2000-02-01 00:03 RAJNI GOSALIA 3014645947 >> 2025292377 P 1

श्री कानजी स्वामी के प्रवचन साहित्य का अनुशीलन

2000-02-01 00:04 RAJNI GOSALIA 3014645947 >> 2025292377 P 2/6

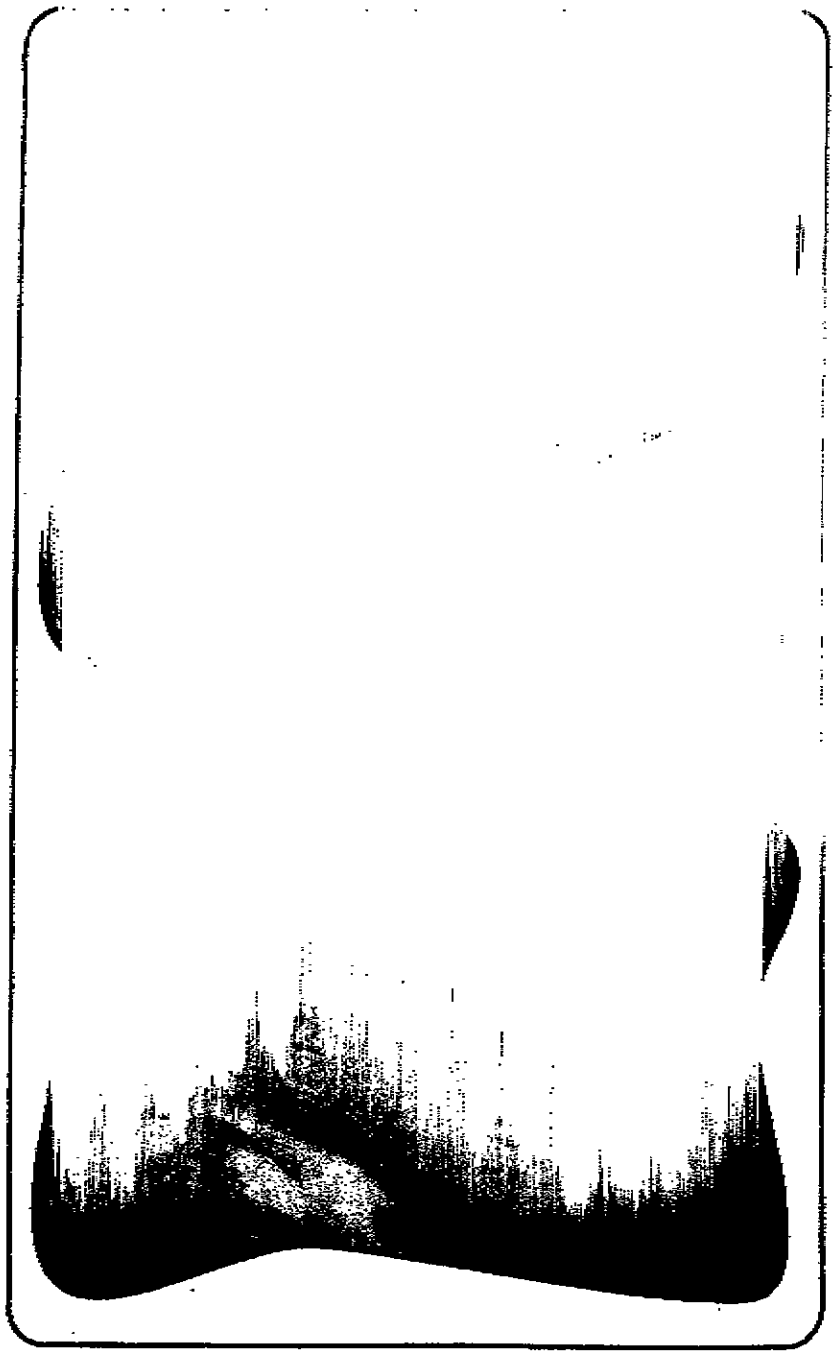

अनुक्रमणिका

1. प्रथम अध्याय : कानजी स्वामी का व्यक्तित्व एवं अवदान

1.1. व्यक्तित्व परिचय 1 – 47

1.1.1. प्रस्तावना
1.1.2. परिवेश
1.1.3. जन्म
1.1.4. परिवार
1.1.5. नामकरण
1.1.6. संस्कारार्जन
1.1.7. विद्यारम्भ
1.1.8. व्यवसाय
1.1.9. जीवन में नाटकों का प्रभाव
1.1.10. वैराग्य उद्भव
1.1.11. गुरू हीराचन्द का प्रभाव
1.1.12 श्रमण दीक्षा (स्थानकवासी सम्प्रदाय)
1.1.13. श्रमण जीवन का प्रथम चरण
1.1.14. "समयसार" का प्रभाव
1.1.15. "मोक्षमार्ग प्रकाशक" का प्रभाव
1.1.16. मतपरिवर्तन
1.1.17. उपलब्धि
1.1.18. देहावसान

1.2. साहित्यिक अवदान

1.2.1. मूलग्रन्थों का प्रकाशन
1.2.2. प्रवचन साहित्य का प्रकाशन
1.2.3. पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन

1.3. धार्मिक अवदान

1.3.1. दिगम्बर धर्म का प्रचार–प्रसार
1.3.2. जिनमन्दिर निर्माण
1.3.3. पंचकल्याणक प्रतिष्ठा

2000-02-01 00:06 RAJNI GOSALIA 3014645947 >> 2025292377 P 3/6

1.3.4. देवी प्रतिष्ठा
1.3.5. शिक्षण–शिविर का आयोजन
1.3.6. तत्त्वप्रचार हेतु देश–विदेश में भ्रमण
1.3.7. जनमानस पर कानजीस्वामी का प्रभाव
1.4. निष्कर्ष

2. द्वितीय अध्याय : श्रमण संघ परम्परा और कानजी स्वामी

2.1. श्रमण संघ परम्परा **48 – 101**
2.1.1. श्रमण का स्वरूप एवं इतिहास
2.1.2. तीर्थंकर परम्परा
2.1.3 आचार्य परम्परा
2.1.4. विद्वत् परम्परा एवं कानजी स्वामी
2.2. प्रमुख सम्प्रदाय
2.2.1. दिगम्बर सम्प्रदाय
2.2.2. श्वेताम्बर सम्प्रदाय
2.2.3. दिगम्बर एवं श्वेताम्बर सम्प्रदाय : कानजी स्वामी की दृष्टि में
2.3. श्रमण परम्परा का आध्यात्मिक साहित्य एवं विशेषताएँ
2.3.1. श्रमण साहित्य का स्वरूप एवं विभाजन
2.3.2. श्रमण साहित्य की विशेषताएँ
2.3.3. श्रमण परम्परा के साहित्य में कानजी स्वामी का योगदान (आध्यात्मिक साहित्य के परिप्रेक्ष्य में)
2.4. निष्कर्ष

3. तृतीय अध्याय : कानजी स्वामी के प्रवचन साहित्य के प्रमुख मूल आधार ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय 102–153

3.1. प्रवचन साहित्य का उद्भव एवं विकास
3.2. कानजी स्वामी के प्रवचन साहित्य के प्रमुख मूल आधार ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय
3.2.1 समयसार
3.2.2. प्रवचनसार
3.2.3. नियमसार
3.2.4. पंचास्तिकाय संग्रह
3.2.5. अष्टपाहुड़
3.2.6. कार्तिकेयानुप्रेक्षा
3.2.7. वृहद्द्रव्यसंग्रह
3.2.8. पुरुषार्थसिद्धि उपाय
3.2.9. योगसार
3.2.10. परमात्मप्रकाश
3.2.11. समाधितन्त्र
3.2.12. पद्मनन्दि पंचविंशतिका
3.2.13. इष्टोपदेश
3.2.14. भक्तामर स्तोत्र
3.2.15. विषापहार स्तोत्र
3.2.16. समयसार कलश टीका
3.2.17. समयसार नाटक
3.2.18. मोक्षमार्ग प्रकाशक
3.2.19. छहढ़ाला
3.2.20. अनुभवप्रकाश
3.2.21. अन्य ग्रन्थ
3.3. निष्कर्ष

4. चतुर्थ अध्याय : कानजी स्वामी के प्रवचन साहित्य का वर्गीकरण 154 – 281

4.1. प्रवचन साहित्य का स्वरूप
4.2. कानजी स्वामी के प्रवचन साहित्य का वर्गीकरण
4.2.1. विषय की दृष्टि से वर्गीकरण
4.2.1.1. अध्यात्म प्रधान प्रवचन साहित्य
4.2.1.2. चरित्र प्रधान प्रवचन साहित्य
4.2.1.3. भक्ति प्रधान प्रवचन साहित्य
4.2.1.4. वैराग्य प्रधान प्रवचन साहित्य

2000-02-01 00:07 RAJNI GOSALIA 3014645947 >> 2025292377 P 4/6

4.2.1.5. प्रासंगिक प्रवचन साहित्य
4.2.1.6. वचनकृत प्रवचन साहित्य
4.2.1.7. विविध प्रवचन साहित्य
4.2.2. भाषा की दृष्टि से वर्गीकरण
4.2.2.1. गुजराती भाषा में रचित प्रवचन साहित्य
4.2.2.2. अनूदित प्रवचन साहित्य
हिन्दी भाषा में अनूदित प्रवचन साहित्य
मराठी भाषा में अनूदित प्रवचन साहित्य
अंग्रेजी भाषा में अनूदित प्रवचन साहित्य
4.2.3. शैली की दृष्टि से वर्गीकरण
4.2.3.1. विषय मीमांसक प्रवचन साहित्य
4.2.3.2. सूत्रात्मक प्रवचन साहित्य
4.2.3.3. भाष्यात्मक प्रवचन साहित्य
4.2.3.4. टीकात्मक प्रवचन साहित्य
4.2.3.5. उपदेशात्मक प्रवचन साहित्य
4.2.3.6. प्रश्नोत्तरात्मक प्रवचन साहित्य
4.3. निष्कर्ष

5. पंचम अध्याय : कानजी स्वामी के प्रवचन साहित्य का दार्शनिक मूल्यांकन 282 — 357
5.1. भारतीय दार्शनिक साहित्य की परम्परा
5.2. भारतीय दर्शनों का वैशिष्ट्य
5.3. जैनदर्शन साहित्य की प्रवचन–परम्परा
5.4. कानजी स्वामी के प्रवचन साहित्य के मूल दार्शनिक सिद्धान्त
5.4.1. तत्त्व–मीमांसा
1. सात तत्त्व
2. छह द्रव्य
3. आत्मा–परमात्मा
5.4.2. ज्ञान–मीमांसा
1. प्रमाण
2. नय
3. अनेकान्त
4. स्याद्वाद
5.4.3. कर्म–मीमांसा
1. कर्मबन्ध प्रक्रिया
2. अहिंसा
5.4.4. अन्य दार्शनिक सिद्धान्त
1. वस्तु स्वातन्त्र्य
2. निमित्त–उपादान
3. क्रमबद्धपर्याय
5.5. भारतीय दर्शनों का समीक्षात्मक अध्ययन — कानजी स्वामी की दृष्टि में
5.6. निष्कर्ष

6. षष्ठ अध्याय : कानजीस्वामी के प्रवचन साहित्य का आध्यात्मिक मूल्यांकन 358–406
6.1. आत्मा का स्वरूप
6.2. आत्मोपलब्धि के साधन
6.2.1. स्वाध्याय
6.2.2. तत्त्वविचार
6.2.3. भेद–विज्ञान
6.2.4. ध्यान (स्वरूप एवं भेद)
6.2.5. आत्मानुभव
6.3. आत्मिक सुख (मोक्षसुख) : स्वरूप एवं उपाय
6.3.1. आत्मिक सुख का स्वरूप
6.3.2. आत्मिक सुख के साधन
6.3.2.1. सम्यग्दर्शन स्वरूप एवं वैशिष्ट्य
6.3.2.2. सम्यग्ज्ञान स्वरूप एवं वैशिष्ट्य
6.3.2.3. सम्यक्चारित्र स्वरूप एवं वैशिष्ट्य
6.4. निष्कर्ष

P 5/6
2025292377
3014645947 >>
RAJNI GOSALIA
2000-02-01 00:08

7. सप्तम अध्याय : प्रवचन साहित्य की भाषा–शैली
7.1. भाषा 407– 438
7.1.1. भाषागत विशेषताएँ
7.1.1.1. शब्द–चयन
1. तत्सम शब्द
2. तद्भव शब्द
3. देशज शब्द
4. विदेशी शब्द
5. गुजराती शब्द
7.1.1.2. मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग
7.2. शैली
7.2.1. शैली की विशेषताएँ
7.2.2. शैली के विभिन्न रूप
1. अध्यात्म–शैली
2. प्रश्नोत्तर शैली
3. दृष्टान्त शैली
4. सूत्रात्मक शैली
5. व्याख्यान शैली
6. दार्शनिक शैली
7. उपदेशात्मक शैली
7.3. कारक और विभक्तियाँ
7.3.1. कर्त्ताकारक
7.3.2. कर्मकारक
7.3.3. करणकारक
7.3.4. सम्प्रदानकारक
7.3.5. अपादानकारक
7.3.6. सम्बन्धकारक
7.3.7. अधिकरणकारक
7.3.8. सम्बोधनकारक
7.4 निष्कर्ष

8. अष्टम अध्याय : कानजी स्वामी की हिन्दी जैन प्रवचन साहित्य को देन 439 — 453
8.1. कानजी स्वामी की हिन्दी जैन प्रवचन साहित्य को देन
8.1.1. गद्य साहित्य के विकास में
8.1.2. भाषा को विस्तारित करने में
8.1.3. विवेचन शैली के प्रयोग में
8.1.4. प्रश्नोत्तर शैली के संवर्द्धन में
8.1.5. भाषा के प्रचार–प्रसार में
8.2. निष्कर्ष

9. अभिमत 454 — 460

–: प्रस्तुत संस्करण की कीमत कम करने में सहयोगी :–

1. 15000 — डॉ. वासन्तीबेन शाह, मुम्बई
2. 11000 — श्री कुन्दकुन्दकहान तत्त्व प्रचार–प्रसार समिति, दादर,मुम्बई
3. 5000 — श्री कुन्द–कुन्द कहान वीतराग विज्ञान शिक्षण समिति, उदयपुर
4. 5000 — श्री महीपाल धनपाल ज्ञायक, बांसवाड़ा
5. 2100 — श्यामजी शाह, उदयपुर
6. 2100 — श्रीमती प्रमिला पत्नि डॉ. श्रीयांस जैन जयपुर
7. 2100 — श्री कन्हैयालाल नरेन्द्रकुमार दलावत, उदयपुर
8. 2100 — श्री भागचन्द कालिका, उदयपुर
9. 1100 — श्री कचरूलाल मेहता, उदयपुर
10. 1100 — श्री सोहनलाल राजमल गोदड़ोत, उदयपुर
11. 1100 — श्री चन्द्रप्रभ कहान दि. जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, (गायरियावास) उदयपुर
12. 1100 — श्री टिकमचंद विमलकुमार लिखमावत, उदयपुर
13. 1100 — श्री नेमीचन्द चम्पालाल मोसावत चेरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर
14. 1100 — श्री रमेशचन्द्र श्रुतकुमार वालावत, उदयपुर
15. 500 — श्री लक्ष्मीलाल घाटोल
16. 500 — श्रीमती कल्पना जैन, उदयपुर
17. 500 — श्री हीरालाल सिंघवी, उदयपुर
18. 251 — श्री चन्दुलाल जैन, कुशलगढ़
19. 100 — श्री सम्पतलाल लूणदा

डॉ ममता जैन

जन्म-तिथि : 1 जुलाई 1968

जन्म स्थान : दुवारा जिला - छतरपुर (म.प्र.)

पति : पं. राजकुमार जैन, शास्त्री, जैनदर्शनाचार्य

शिक्षा : M.A. PH.D.

अभिरुचि : धार्मिक चिंतन, गतिविधि-आयोजन, लेखन।

सम्प्रति : हिंदी प्राध्यापिका, आरवली विद्यालय, बाँसवाड़ा

अन्य :
- आकाशवाणी-वार्ता उद्घोषिका
- विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखादि का प्रकाशन
- द्विपक्षिक मासिक पत्रिका के द्वारा ~~[illegible]~~ स्थापित 'महिला जगत' की संयोजिका